7 बादल को घिरते देखा है

नागार्जुन

(जन्म : सन् 1917 ई. : निधन : सन् 1998 ई.)

हिन्दी के जनवादी नागार्जुन का जन्म ननिहाल (सतलखा, जिला मधुबनी, बिहार) में हुआ था। उनका पैतृक गाँव तरौनी, दरभंगा बिहार में पड़ता है। उनका मूलनाम वैधनाथ मिश्र था। उनकी शिक्षा गाँव की संस्कृत पाठशाला में तथा उच्चशिक्षा बनारस में हुई।

नागार्जुन ने हिन्दी में 'रतिनाथ की चाची', 'नयी पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'वरुण के बेटे', 'दुखमोचन', 'कुम्भीपाक', 'हीरक जयंती', 'उग्रतारा', 'जमनिया का बाबा', 'पारो', 'गरीबदास' आदि उपन्यास लिखे हैं। 'युगधारा', 'सतरंगे पंखोंवाली', 'प्यासी पथराई आँखें', 'तुमने कहा था', 'खिचड़ी विप्लव देखा हमने', 'पुरानी जूतियों का कोरस', 'हजार-हजार बाँहोंवाली', 'रत्नगर्भा', 'ऐसे भी हम क्या ! ऐसे भी तुम क्या !', 'आखिर क्या कह दिया हमने', 'इस गुब्बारे की छाया में' आदि उनके कविता-संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त निबंध, कहानियाँ, संस्मरण और अन्य विधाओं में भी उन्होंने लेखन किया है। नागार्जुन को मैथिली साहित्य अकादमी पुरस्कार, हिन्दी सेवा विशिष्ट सम्मान, भारत-भारती, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान से सम्मानित किया गया है।

तिब्बत -यात्रा के क्रम में हिमालय-दर्शन से, प्रकृति के निर्मल-निच्छल रूप को देखने से कवि के मन में सौंदर्य का जो उफान आया, उसे इस कविता में ढाला है। इसमें कहीं मानसरोवर में कमलों के ऊपर वर्षाबूँदों के गिरने के चित्र हैं तो कहीं झीलों में हंसों द्वारा कमलनाभ खोजने के दृश्य हैं। चिरविरह के बाद चकवा-चकई का मिलना और शैवालों की हरी-दरी पर प्रणय-कटाक्ष करना आदि रोमानी वातावरण की सृष्टि हमारी प्रणय-चेतना को मुखर करता है।

अमल-धवल गिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है,
छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।
तुंग हिमालय के कंधों पर

छोटी-बड़ी कई झीलें हैं
उनके श्यामल-नील सलिल में
समतल देशों सें आ-आकर
पावस की उमस से आकुल
तिक्त-मधुर बिसतंतु खोजते
हंसों को तिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

ऋतु वसंत का सुप्रभात था
मंद-मंद था अनिल बह रहा
बालारुण की मृदु किरणें थीं
अगल-बगल स्वर्णाभ शिखर थे
एक-दूसरे से विरहित हो
अलग-अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती
निशाकाल के चिर-अभिशापित
बेबस उन चकवा-चकई का
बंद हुआ क्रंदन, फिर उनमें
उस महान् सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर

प्रणय कलह छिड़ते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अमल-धवल निर्मल और उज्ज्वल **शिखर** चोटी **तुहिन** बर्फ **तुंग** ऊँचा **सलिल** पानी, जल **समतल देश** मैदानी भाग **अमस** गरमी **बिसतंतु** कमलनाल, कमलदंड, जिन पर कमल का फूल खड़ा रहता है **तिरना** तैरना **अनिल** पवन **बालारुण** बाल सूर्य, सुबह का लाल सूर्य **स्वर्णाभि** सोने जैसी चमक **विरहित होना** बिछड़ना अलग होना **चिर अभिशापित** जो सदा के लिए शाप-ग्रस्त हो **क्रंदन** करुणापूर्ण रुदन **शैवाल** जल में उत्पन्न होनेवाली घास **दरी** बिछौना, बिस्तर **प्रणय कलह** प्रेमपूर्ण कलह (झगड़ा)

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए।

(1) कवि ने अमल-धवल गिरि के शिखरों पर किसको घिरते देखा है?
(क) सूर्य को (ख) बादल को (ग) चंद्र को (घ) बारिश को

(2) कवि ने छोटे-छोटे मोती जैसे कणों को मानसरोवर में कहाँ पर गिरते देखा है?
(क) स्वर्ण कमल पर (ख) बादलों पर (ग) फूलों पर (घ) हरी घास पर

(3) जब बादल को घिरते देखा, तब किस ऋतु का प्रभाव था?
(क) वर्षा (ख) हेमंत (ग) वसंत (घ) शिशिर

(4) कवि ने मानसरोवर के श्याम नील सलिल में किसको तैरते देखा है?
(क) मछलियाँ को (ख) हंसों को (ग) बगुलों को (घ) भैंसों को

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए:

(1) प्रस्तुत कविता किस दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण है?
(2) इस कविता का रचनाकाल क्या है?
(3) कवि ने कमल को किस रंग का बताया है?
(4) प्रस्तुत कविता में कवि ने किसका परिवेश प्रस्तुत किया है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में दीजिए ।

(1) कविता के प्रथम चरण में क्या दृश्य है?
(2) हंस किससे ऊबकर शीतलता प्राप्त करने हिमालय पर आते हैं?
(3) बासंती सुबह में सरोवर के किनारे शैवालों की हरी दरी पर किसके प्रणय-कलह का दृश्य है?
(4) कवि ने किरणों और शिखर को कैसा बताया है?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः पंक्तियों में लिखिए:

(1) प्रस्तुत कविता में कवि की सौंदर्य की नैसर्गिता का वर्णन कीजिए।
(2) कवि ने किन रंगों के संयोजन से इन्द्रधनुषी प्रभाव पैदा किया है?
(3) कविता में कवि की कल्पना और भावुकता का वर्णन कीजिए।

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

बालारुण की मृदु किरणें थीं । अगल-बगल स्वर्णाभ शिखर थे ।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्ति : 'युगधारा' कविता-संग्रह प्राप्त करके पढ़ें।

(2) शिक्षक प्रवृत्ति : सुमित्रानंदन पंत की कविता 'नये पत्ते' पर कक्षा में चर्चा कीजिए।